नया मोड

"प्रथम स्थान .... मीरा जयकुमार"। अपना नाम सुनते ही मीरा खुशी से कूदने लगती है। उसे अपने आप पर पूरा विश्वास था। स्कूल के नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मीरा को मिला है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नही है। मीरा की माँ संगीता एक नृत्यप्रेमी है। बचपन से उसके माँ ने उसे नृत्य सीखने केलिए भेजा। तो फिर जीत उसका नही तो किसका होगा? मीरा केलिए सब तालियाँ बजाने लगी और हेटमास्टर से उसने ट्रोफी भी ली। कितना अंच्छा दिन था वो।

अपने ट्रोफी छाती के पास रखकर मीरा घर लौटा। उसे दिखाना था अपने माँ को; कि उसकी बेटी ने आज कमाल का काम किया है। मीरा बस से उतरकर घर के

रास्ते से गुज़र रही थी। अचानक वह किसी सोच में खो गई। मीरा का एक ही सपना था बचपन से। स्टेट नृत्य प्रतियोगिता जीतना। उसका सेलेक्शन तो हो गया। लेकिन क्या वह जीत पाएगी। घर पहुँचते ही मीरा अपने माँ के करीब जाकर उन्हें अपनी ट्रोफी दिखाती है।

"मीरा... मुझे पता था तुम जीतोगी। मैंने बप्पा से प्रार्थना की थी। देखो, तुम्हारी उडान अब कोई नही रोक सकता"। उसके माँ ने उसे आगोश में लिया। "लेकिन अगला प्रतियोगिता दिल्ली में है। हम कैसे जाएँगे? पापा थोडे न हमे जाने देंगे।" मीरा ने अपने परेशानी माँ को बताई। "तुम उसका फिक्र मत करो। बस प्राक्टीस पर ध्यान दो। पापा को मैं मना लूँगी। तू चिंता मत कर।" संगीता ने मीरा ~~को~~ से वादा किया।

"सुनो मीरा... अगर पापा गुस्सा करेगा तो तुम बीच में मत आना। मैं सब कुछ संभाल

लूँगी।" मीरा ने अपने माँ के चेहरे का डर पहचान लिया। वह जानती थी कि उसकी माँ झूठ बोल रही है। 'शांति' - ऐसा कोई चीज़ उस घर में कभी थी ही नहीं। फिर भी अपनी माँ को तसल्ली केलिए ही सही; मीरा ने हाँमी भरी।

.....

रात के ग्यारह बज चुके थे। मीरा के पापा घर वापस लौटा। लेकिन वह होश में नहीं था। जयकुमार एक पियक्कड आदमी था। डाकखाने में काम करनेवाले अफसर थी उसकी पापा। लेकिन उनके सच्चाई सिर्फ मीरा और उसकी माँ जानती थी। मीरा केलिए अब यह रोज़ का मामला है। उस दिन भी जयकुमार पीया हुआ था। वह रोज की तरह कोठरी के एक कोने में बैठकर संगीता को गालियाँ देने लगा है। समाज के आदरणीय अफसर का यह रूप किसी ने नहीं देखा था।

वही पुरानी मसला है उसका । 'दहेज' - पता नही मीरा कितनी बार यह शब्द उस घर में सुन चुका है। मीरा रसोई में अपने माँ के पास गई। "मुझे नही लगता कि यह सही वक्त है।" "तुम कल क्यों नही पापा से बात कर सकते"। "कल क्या तुमारी हालत बदलने वाली है? कल भी वह ऐसा ही आएगी मीरा। तो फिर क्यों न आज ही पूछ लें।" संगीता अपने ज़िंदगी में आज तक सब कुछ सहती आई है। लेकिन बात जब अपनी बेटी की है, तब वह पीछे हटना नही चाहती है। उसने धैर्य इकट्ठा करके जयकुमार के पास जाकर पूछा और जिसका होने का मीरा को डर था, वही हुआ। "नाचने जा रही है वो... क्यों? तुम दोनों जो मेरे सिर पर नाच रही हैं, वो काफी नही है, बडी आई...। वैसे भी क्या करेगी मीरा ये सबसे। ऐसे बकवास बात कभी

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

मत करना।" संगीता ने उन्हे मनाने की बहुत कोशिश की लेकिन जयकुमार ज़िद्दी था। "अगर तुम दोनों में से एक भी इस घर के बाहर कदम रखेगी न तो गला काट दूँगी दोनों की।" मीरा से अब यह सही नही जा रही थी। दरवाजे के पीछे से वह निकला। "मैंने आपसे कभी भी कुछ माँगा है क्या? आप जैसे इनसान तो पापा कहकर बुलाने के लायक भी नही है।" जयकुमार को मीरा के बातों से बहुत गुस्सा आया। वह गरजने लगा "जैसी माँ, वैसी बेटी। तुमने ही इसे यह सब सिखाया है न।" "आज मैं तुम्हें सबक सिखाके ही रहूँगा।" जयकुमार ने अपने पास रखा हुआ बोत्तल संगीता की ओर फेंका। तुरंत मीरा ने संगीता को बचाने के लिए बीच में कूदा। बोत्तल मीरा के माथे पर लगी और वहाँ एक छोटी-सी चोट आई। ज़ख्म भले ही छोटा

क्यों न हो, लेकिन उसका दर्द असहनीय था। संगीता ने मीरा को अपने बाहों में लिया और उसे सांत्वना देने की कोशिश की। लेकिन मीरा उसके हाथों से निकलकर अपने कमरे के अंदर घुसा, जल्द ही उसने दरवाज़ा बंद कर दिया। संगीता ने उसे बाहर बुलाने की बहुत कोशिश की। लेकिन वह असफल रहा। अंदर मीरा टूट रही थी। इतने सालों से उसने जो कुछ भी अपने अंदर दबा के रखा, वो सब पुक नदी की तरह उसके आँखों से बहने लगी। खुद को रोक नही पा रही थी वो। मीरा दहाकर रो पडी। उसे समझ नही आ रही थी कि वह किसपर गुस्सा करें, अपने पियक्कड बाप पर, या उस माँ पर जिसने कभी भी आपने आपको उस रिश्ते से बचाने की कोशिश नही की। अगर संगीता एक ऐसी कदम उठा लिया होता तो आज शायद मीरा की ज़िंदगी ऐसी नही होती।

..... फिर भी मीरा प्यार बहुत करती है अपनी माँ से। वह जानती है कि उसकी मज़बूरी थी। अगर उन्हें एक और मौका मिलती; तो वह जरूर अपने चुनाव बदल देती। मीरा ने धीरे दरवाज़ा खोला। उसकी माँ बाहर रोते हुए उसकी इंतज़ार कर रही थी। उसकी बाप नीचे बेहोश पडा था। उसने अपने माँ को अंदर बुलाई "माँ, क्या आप पापा को तलाक दे सकती है? मैं अपनी पूरी ज़िंदगी ऐसी नरक में बिताना नही चाहती। मैंने सोचा था मैं सह पाऊँगी, लेकिन मैं गलत थी। मैं आप नही हूँ माँ; मैं पापा की हरेक गलती को आपकी तरह बरदाश्त नही कर सकती। मेरे अपने सपने हैं। मैं उन्हे कभी छोडना नही चाहती। ऐसे तडपते-तडपते जीयुगी तो मैं कैसे अपने मंज़िल तक पहुँच पाऊँगी। मैं आज़ाद्दी चाहती हूँ। एक दिन ही तो सही, चैन .....

और शांति से सोना चाहती हूँ।" संगीता पर मीरा के शब्दों का गहरा असर पड़ा। उसके आँखों में कुछ चमक रहा था। जैसे उसने कुछ दृढ़निश्चय लिया हो।

एक हफ्ते बाद स्टेट कलोत्सव के नृत्य प्रतियोगिता के बैकस्टेज पर मीरा तैयार हो रही थी। खिड़की के पास उसकी माँ कोई और से बातचीत कर रही थी। अपने माँ को खुलकर हँसते देख मीरा का मन भर गया। फैनल टच-अप केलिए उसने आइना उठा लिया। आइने में खुद को देखते समय एक पल केलिए वह स्तब्ध रह गई थी। कुछ बदल चुका था। उसने कई बार अपने आप को ऐसा देखा है। लेकिन आज कुछ बड़ा बदलाव है। आज जो वह उस आइने में देख रही है, वह उसे गर्व महसूस करा रहा है।

क्योंकि जिस लडकी को आज वह देख रही है उसका जन्म कुछ दिन पहले ही हुआ था। वह लडकी अपने सपनों केलिए लडती है। अपने मन की बात बोलती है। सबसे बडी बात यह है कि वो किसी की भी कैद में नही है। उसे न कोई हरा सकता है न कोई रोक सकता है। उस लडकी से मीरा बहुत आदर करने लगी थी।

अपनी नाम सुनते वह स्टेज में जाती है और वही करने लगती है जो वह सबसे अच्छा जानती है - नृत्य। उस कला जिसने उसे सारी बुराइयों से बचाकर अपने गोद में समेटकर रखी थी।